सं भो. वि./फरीदाबाद/125-84/10927.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं खोसला फ़ांउडरी लि॰, 18/8 कि मि॰ मयूरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री ध्रयोध्या तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवास को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भौदोगिक विवाद भिवितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिवित्य सं 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 चून, 1968, के साथ पढ़ते हुए प्रिष्ठभूचना सं 11495—जी—श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनयम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायनिगय के लिए निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भया सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री अयोध्या की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है?

सं. भी. वि./फरीदाबाद/28-85/10941.—पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ सिराको प्रोसेसिंग प्रा॰लि॰, 15/7 मथुरा रोड, फरीदाबाद, के थिमक श्री राजवीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामको में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्गय हेन् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब. श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं० 11495-जी-श्रम/58-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राजवीर सिंह की सेवायों का समापन न्यापोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. थ्रो.वि./फरीदावाद/33-85/10948.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. जीविका उद्योग 15/5 मथूरा रोड़, फ़रीदाबाद के बामक श्री हरेन्द्र पुरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीकोगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्वायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ट्रचुना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ट्रचुना सं । 1495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के धधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री हरेन्द्र पुरी की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. क्रो.वि./फरीदाबाद / 29-85/10962.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोहिनुर पेन्टस प्रा. लि., मथुरा रोड़ फरीदाबाद के श्रमिक श्री देवी चरण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई क्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के धण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिल्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/15254, दिमांक 20 ्रा. 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उन्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को निवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय निवाद के जिये निर्दिश्य करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अध्या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री देवी अरण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. मो.पि./फरीदाबाद/11-85/10969.—पूंछि द्वरियाणा छे राज्यपास की सम दे कि मंग बंगाल ने उनल टेन्सटाइल मिल्क लि॰ 14/5 मधुरा रोड़, फरीदाबाद के धामकों थी सलान सूची सथा इसके प्रवाधकों के मध्य इसकें इसके बाद किक्कि धामकों में कोई धौदोगिक विवाध है:

भीर पूंि इरिवामा है राज्यमान निपाय को स्वायनिर्वेत हेतु निविध्य क्रमा सोधनीय समझते हैं ;

इस लिए, घन, मौजीविक विनाद प्रधितियम, 1947, की घारा 10 की जपधारा (1) से प्रण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों साम्राम करते हुए, हरियाचा से राज्यपाल इसके द्वारा घरकारी स्रधिसूचना हं. 5415-3-धम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 से धमन पड़ते हुए प्रधिसूच हं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उन्त स्रधितियम की धारा 7 से धारीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्पंच के लिए निव्यंद स्रसे हैं, जो कि उन्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

नवा श्री सलान सूची की सेवाघों का समापन न्यायोजित तथा ठीए हैं? यदि नृहीं, तो वह किस राहत का इकदार हैं?
दिनांक 20 मार्च 1985

सं भो वि | पानीपत | 15-85 | 11341.—-पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं असोका इण्डस्ट्रीज, एम0-14 इन्जस्ट्रियल ऐरिया, पानीपत के श्रीमफ श्री सुरज भान तथा उसके प्रयन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद ितित मामजे में जोई सीजोजिज जिला है ;

भौर पूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करक बौधनीय सम्रज्ञ े े;

इसंबिए, मय, मौधोपिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की परं धिक्तमों का प्रयोग करते हुए, हरियांका के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिभूचना संव 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैस, 1984 द्वारा उदत प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम व्यायालय, प्रभ्वाला, को विवादप्रस्त या उससे संबंधित मौधे निया मानदा न्यायनिर्वय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, को कि उक्त प्रयन्धकों तथा अमिक के बीध या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद प्रदेश प्रधीन ग्रथन ग्रथना ग्रथना संबंधित मामला है :---

प्या भी सूरज भान भी **धेनाओं भा समापन न्यानोप्ति तवा ठीउ है** ? यदि नहीं, तो वट्ट क्रिय राज्य भा हकबार 🗘 🖁

सं भो वि | कि दीवाद | 19 84 | 11347.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मै व्योनस पेपर (पैक्िनंग िविजन) 20 | 4 मधुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री ललन राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके दाद लिखित मामले में कोई भौधोगिक विवाद है ;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समजते हैं ;

दसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1—श्रम-70/32573, दिनांक ह नजम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए-एस-आो. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उन्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गढित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिया मामका न्यायानियं हेतृ निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक केबीच या तो विवादअस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रलन राम की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहल का एकदार है ?